REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

'महासमर' उपन्यास में दाम्पत्य जीवनः एक अध्ययन

संजू
शोधार्थी, हिन्दी विभाग , बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक.

प्रस्तावना

नरेन्द्र कोहली का साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है। नरेन्द्र कोहली अप्रतिम व्यक्तित्व के स्वामी हैं। हिन्दी साहित्य में उन्होंने लगभग प्रत्येक विद्या पर अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने रामकथात्मक, कृष्णकथात्मक तथा पौराणिक उपन्यास भी लिखे हैं। आज साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में उभर कर सामने आए हैं। 'महासमर' उपन्यास महाभारत का आधुनिक रूप है और उसमें वही प्रासंगिकता देखने को मिलती है जो प्राचीन काल में महाभारत में थी। इस उपन्यास में नरेन्द्र कोहली ने दाम्पत्य जीवन के कटु तथा मधु अनुभवों का सजीव चित्रण किया तथा पात्रों के माध्यम से वैवाहिक जीवन को सामहित किया है।

भारत में दाम्पत्य जीवन प्राचीनकाल से ही पवित्र रहा है। परन्तु आज बदलते युग के साथ मूल्यों का विघटन हो रहा है जिसके कारण दाम्पत्य जीवन में भी विघटन की गति उग्र होती जा रही है। दाम्पत्य जीवन में प्रेम कहीं खो सा गया है। आज सामाजिक, आर्थिक एवं भावात्मक कारणों से पति–पत्नी के सम्बन्धों में अपनेपन का भाव समाप्त हो रहा है। पति–पत्नी का सम्बन्ध एक पवित्र रिश्ता माना जाता है, परन्तु आज उसमें प्रेम, मधुरता, विश्वास आदि भावों का स्थान कटुता, क्रोध और द्वेष आदि ने ग्रहण कर लिया है।

पति–पत्नी के सम्बन्धों को लेकर बिन्दू अग्रवाल का विचार है– ''अपनी योग्यता, कुशलता और सेवा से दाम्पत्य जीवन को निरन्तर सुचारू रूप से चलाना पति–पत्नी का धर्म है। यह धर्म परिवार की नैतिकता और शान्ति का मेरूदण्ड है।''

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए पति–पत्नी दोनों ही महत्त्वपूर्ण कड़ी होते हैं। इस रिश्ते के सुखी भविष्य के लिए पति–पत्नी दोनों कामहत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं और समाज में एक सम्मानित स्थान पाते हैं। गृहस्थ जीवन में जितने भी सुख होते हैं, वह दाम्पत्य जीवन की सफलता पर ही आधारित होते हैं। यदि व्यक्ति के दाम्पत्य जीवन में संघर्ष है तो उसे आत्मिक सन्तुष्टि की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। सुखी दाम्पत्य जीवन का आधार पति–पत्नी का सात्विक प्रेम होता है। दाम्पत्य जीवन में दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा त्याग का भाव होता है। हमारे प्रेम–सम्बन्धों का आधार प्रेम होता है और जब यही प्रेम स्वार्थी हो जाता है तो हमारे सम्बन्ध बिखरने लगते हैं। सौन्दर्य और वासना का प्रेम हमारे सम्बन्धों को खोखला कर देता है। जो इस जाल में फँस जाते हैं, उनका दाम्पत्य जीवन बड़ी ही निराशा से भरा हुआ होता है। यदि दाम्पत्य जीवन में सच्चा प्रेम और समर्पण है तो बड़े से बड़ा आद्यात भी व्यक्ति को चोट नहीं पहुँचा सकता। पति–पत्नी के सम्बन्धों से ही परिवार में प्राणों का संचार होता है। इस सम्बन्ध को बनाने में विवाह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि इसी कारण यह पवित्र रिश्ता जन्म लेता है। दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए उसमें विश्वास भी अहम कड़ी का कार्य करता है। जब किसी के दाम्पत्य जीवन में विश्वास समाप्त हो जाता है तो इस रिश्ते की जड़ें तक हिल जाती हैं। यदि पति पत्नी में आपसी समझ का भाव है तो यह समस्या आसानी से सुलझ जाती है।

यहाँ पर 'महासमर' उपन्यास में दाम्पत्य जीवनः एक अध्ययन विषय को आधार बनाया है क्योंकि इसमें दाम्पत्य जीवन का परिप्रेक्ष्य देखने को मिलता है। 'महासमर' उपन्यास 'महाभारत' का आधुनिक रूप है। इस उपन्यास को आठ खण्डों में विभाजित किया गया है। इस उपन्यास के लेखक नरेन्द्र कोहली हैं। नरेन्द्र कोहली अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। उन्होंने लगभग साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। हिन्दी के समकालीन साहित्य में नरेन्द्र कोहली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके साहित्य में सामाजिक जन–जीवन, दाम्पत्य जीवन, स्त्री की मनोदशा आदि को चित्रित किया गया है। 'महासमर' उपन्यास में अनेक नारी पात्र लिए गए हैं। सर्वप्रथम महाराज शान्तनु गंगा के जाने के बाद पत्नी वियोग में वनों–पर्वतों में भटकते फिरते हैं। यहाँ तक कि पत्नी वियोग के कारण वह अपने पुत्र देवव्रत को भी भूल जाते हैं। जिसे जीवित रखने के लिए उसने अपनी पत्नी को खो दिया। शान्तनु काम शक्ति में लिप्त रहता है और वह कामाशक्ति सत्यवती को देखने के बाद और भी तीव्र हो जाती है। सत्यवती अत्याधिक सुन्दर है परन्तु दासराज की कन्या है। महाराज अपने विवाह का प्रस्ताव दासराज को सुनाते हैं तो दासराज अपनी शर्त उनके सामने रखते हैं, महाराज शर्त सुनकर उदास नहीं होते अपितु देवव्रत को भ्रमित करके अपना विवाह सत्यवती से करता है। सत्यवती और शान्तनु की आयु में काफी अन्तर होने के कारण ही दासराज ने अपनी शर्त में राजा के बाद सत्यवती के पुत्र को युवराज बनाने का प्रस्ताव रखा। देवव्रत यह शर्त स्वीकार करता है और आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा करता है। देवव्रत अपने पुत्र–धर्म का पालन करते हुए सत्यवती की इच्छा जाने बिना शान्तनु के लिए उनके पिता से मांग लेते हैं। जबकि सत्यवती पराशर ऋषि को अपने पति रूप में स्वीकार कर चुकी थी और पराशर ऋषि से सत्यवती का एक पुत्र भी था। परन्तु उस विवाह के लिए दासराज के अनुमति न देने पर वह अपने पुत्र को पराशर ऋषि के आश्रम में छोड़ देती है। अब सत्यवती के लिए अपना वर्तमान आवश्यक था क्योंकि यह उसके पिता का स्वपन था और वह स्वयं भी सता के प्रति आकर्षित थी। सत्यवती देवव्रत के साथ हस्तिनापुर में शान्तनु की पत्नी के रूप में प्रवेश करती है। अब सत्यवती महाराज शान्तनु की पत्नी है तथा दोनों अपने दाम्पत्य जीवन को प्रारम्भ करते हैं। यह सम्बन्ध समझौते का सम्बन्ध था एवं दोनों की आयु में काफी अन्तर था। सत्यवती ने राजधिकार पाने के लिए शादी की थी और शान्तनु ने काम के प्रति आसक्त होकर सत्यवती को अपनी पत्नी बनाया था। दोनों में किसी प्रकार का कोई प्यार नहीं अर्थात दोनों ने ही स्वार्थी होकर यह रिश्ता बनाया था। शान्तनु यह स्वीकार भी करता है कि यह सम्बन्ध सिर्फ स्त्री के प्रति आसक्ति मात्र है। वह अपनी तुलना में सत्यवती को काफी युवा तथा स्वयं को वृद्ध समझता है। उसका मानना है कि पति–पत्नी सम्बन्ध में अनेक समझौते करने पड़ते हैं। दोनों का रिश्ता वास्तव में समझौता ही है। इस समझौते के जीवन में दोनों की इच्छापूर्ति हुई थी क्योंकि शान्तनु को भोग के लिए नारी तथा सत्यवती को शासन तथा राजधिकार मिल गए थे। इस प्रकार कुछ समय शान्तिपूर्वक व्यतीत होता रहा। दोनों एक दूसरे से असहमत ही रहते थे। शान्तनु को धीरे–धीरे अहसास हो जाता है कि हमारा कोई मेल नहीं है। परन्तु फिर भी अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास करता रहता है। दाम्पत्य जीवन में स्वयं को कुछ ज्यादा ही पहचानने लगे थे और इसी दौरान उसे पहली पत्नी गंगा भी बहुत याद आती थी। गंगा के जाने के बाद शान्तनु अन्दर से अत्यन्त दीन हो गए थे। सत्यवती की हल्की–सी उपेक्षा ही उन्हें विचलित कर देती थी और वे घर में शान्ति बनाए रखने के लिए हर सम्भव प्रयास करते थे। परन्तु सत्यवती स्वार्थों के कारण कुछ नहीं देख पाती हैं। वह शान्तनु पर विश्वास का भाव नहीं रखती है और उसके मन में तिरस्कार के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। प्रारम्भ से लेकर अन्त तक दोनों का सम्बन्ध समझौते का ही रहता है। इन्हीं सम्बन्धों में चित्रांगद और विचित्रवीर्य का जीवन भी भेंट चढ़ जाता है।

'महासमर' (बन्धन) उपन्यास में विचित्रवीर्य के साथ जिन्हें भीष्म काशीराज के स्वयंवर से हरण करके लाते हैं और अम्बिका और अम्बालिका का विवाह किया जाता है। यह विवाह भी बलपूर्वक सम्पन्न करवाया गया था और। इसमें भी दाम्पत्य जीवन नीरस तथा समझौते का ही रहा। विचित्रवीर्य का दाम्पत्य जीवन अभी प्रारम्भ भी नहीं हुआ था कि उनकी असमय ही मृत्यु हो जाती है। सत्यवती के अधिकार की अभिलाषा ने विचित्रवीर्य को भी काल का ग्रास बना दिया। अब उसकी दोनों रानियाँ बेसहारा और अकेली रह गई तथा विवाह के पश्चात् दोनों को ही किसी प्रकार के सुख की प्राप्ति नहीं हुई। हमारी विवाह परम्परा भी कितनी अजीब है इसमें प्रेम रहित दाम्पत्य सम्बन्ध बनाए जाते है और आजीवन निभाने पड़ते हैं वास्तव में विवाह दो आत्माओं का मिलन होता है जो प्रेम तथा समर्पण पर आधारित होना चाहिए। जिसका अभाव शान्तनु तथा सत्यवती और विचित्रवीर्य तथा उसकी दोनों रानियों के दाम्पत्य जीवन में देखा जा सकता है। यहाँ पर सम्बन्ध केवल शरीर भोग तथा

राजधिकार तक ही सीमित हैं। इसी राज्य की अभिलाषा के कारण ही सत्यवती पुत्र की मृत्यु के बाद उसकी सन्तान प्राप्ति के लिए रानियों से नियोग सम्बन्ध बनाने के लिए अपने कानीन पुत्र कृष्ण द्वैपावन व्यास को आमन्त्रित करती है। धृतराष्ट्र और पाण्डू का जन्म इसी नियोग के कारण होता है। विचित्रवीर्य की मृत्यु के पश्चात् दोनों रानियाँ समझौता करती हैं और नियोग से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। परन्तु इसमें प्रेम और समर्पण कहीं भी दिखाई नहीं देता है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री और पुरूष प्रारम्भ में वैवाहिक जीवन की कल्पना करते हैं परन्तु जब वास्तविकता से सामना होता है तो दाम्पत्य जीवन नीरसता से भरा हुआ तथा खोखला नजर आता है। 'महासमर' उपन्यास में शान्तनु तथा सत्यवती के दाम्पत्य जीवन में भोग व स्वार्थ आदि के भावों को स्पष्ट देखा जा सकता है फिर भी शान्तनु अंत तक सत्यवती को सम्मान देता है।

समाज में विवाह मूलभूत आवश्यकता है। विवाह के कारण सम्बन्धों को सम्मान मिलता है यदि हम प्रेम तथा समर्पण से विवाह सम्बन्धों को निभाते हैं तो हमारा दाम्पत्य जीवन सुखमय रहता है। 'महासमर' उपन्यास में पति–पत्नी दोनों की अपने–2 सम्बन्धों को स्वार्थ पूर्ण करने के लिए निभाते हैं। 'महासमर' में दाम्पत्य जीवन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। कुछ विवाह आयु की दृष्टि से असंगत हैं जो मात्र कामवासना की तृप्ति के लिए किए गए थे। नरेन्द्र कोहली ने इसमें प्रकाश डाला है कि एक आयु के बाद पुरूष को माँ की नहीं पत्नी की आवश्यकता पड़ती है। शान्तनु से सत्यवती का विवाह लोभ और सांसारिक लाभ के वशीभूत होकर ही हुआ है। निश्चित रूप से इनका दाम्पत्य जीवन किसी भी रूप में सुखमय और आकर्षक नहीं रहा और न ही विचित्रवीर्य का जीवन सुखमय रहा। 'महासमर' उपन्यास में धृतराष्ट्र और गान्धारी का विवाह भी राजनीतिक संधि प्रस्ताव के माध्यम से हुआ था। परन्तु गांधारी ने धृतराष्ट्र को अपने पति के रूप में स्वीकार करके अपनी आँखों पर पट्टी धारक कर दाम्पत्य जीवन को सहर्ष स्वीकार किया है। दोनों का विवाह सम्बन्ध भले ही सन्धि के प्रस्ताव के माध्यम से हुआ हो परन्तु उनमें एक दूसरे के प्रति प्रेम का भाव ही रहा। सुखी जीवन का निर्वाह करते रहे और अंत तक एक दूसरे के साथ रहे। पाण्डु का विवाह कुन्ती के साथ स्वयंवर के माध्यम से और माद्री का विवाह संधि प्रस्ताव के माध्यम से सम्पन्न होता है और कुन्ती तथा माद्री दोनों के बीच सखियों सा व्यवहार ही रहता है। अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करने से पहलेएक दूसरे को जानने का प्रयास करते हैं परन्तु दोनों ही पाण्डु के पति प्रेम से विलगन ही रहती हैं। लेकिन पाण्डु का साथ नहीं छोड़ती जबकि पाण्डु रतिदान में असमर्थ है। दोनों पत्नियाँ पाण्डु के साथ ही आश्रम में निवास करती हैं और माद्री पाण्डु की मृत्यु के पश्चात् उसके साथ ही सती हो जाती है। इस प्रकार महासमर उपन्यास में दाम्पत्य जीवन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के स्वरूप को देखा जा सकता है।

प्रमुख शब्दः– अप्रतिम, ग्रहण, कामाशक्ति, पति–पत्नी, प्रेम, समझौता, संघर्ष, सम्बन्ध.

सारांशः–

साहित्य सदैव ही समाज की परिस्थितियों, घटनाओं तथा जन–साधारण की भावनाओं की अभिव्यथ्कत का प्रतिबिम्ब रहा है। समाज में वैवाहिक जीवन प्राचीन काल से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इसी के द्वारा वैवाहिक सम्बन्धों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। विवाह एक पवित्र बन्ध है जो त्याग, समर्पण और विश्वास पर टिका होता है। 'महासमर' उपन्यास में प्रारम्भ से ही यह रिश्ता समझौते तथा शर्तों पर आधारित रहा है फिर भी सभी पात्र अपने वैवाहिक जीवन को समर्पण के साथ अपनाते हैं। इस उपन्यास में कहीं–कहीं पर पति–पत्नी के मन का आक्रोश उभर कर सामने आता है परन्तु क्षण मात्र में ही लुप्त हो जाता है। किसी भी सुखी जीवन के लिए पति–पत्नी दोनों ही जीवन का आधार होते हैं। इस उपन्यास के सभी पात्र अन्त तक अपने जीवनसाथी के प्रति ही समर्पित रहते हैं। फिर चाहे वो प्यार के कारण हो या फिर समझौते के कारण रहे हों। इस उपन्यास में दाम्पत्य जीवन के नकारात्मक और सकारात्मक स्वरूप को देखा जा सकता है। आज दाम्पत्य जीवन का स्वरूप परिवर्तित हो रहा है। प्राचीन काल में पत्नी अपने पति को देव स्वरूप समझती थी परन्तु आज यह धारणा बदल रही है। पति और पत्नी दोनों ही अपने अधिकारों के प्रति सचेत हैं। दाम्पत्य जीवन में दोनों का ही समान महत्त्व है। यदि सुखी जीवन का संचालन करना है तो त्याग, धैर्य, समर्पण और प्यार को आधार बनाकर ही सम्भव हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. बिन्दू अग्रवाल– 'हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण' पृ0स0–309, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–63, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–68, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–191, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
5. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–203, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
6. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–223, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–224, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–267, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
9. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–276, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
10. नरेन्द्र कोहली– 'महासमर (बन्धन)' पृ0 सं0–293, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

LBP PUBLICATION